चालीस हदीसें

मौलाना सैयद हामिद अली (रह०)

अनुवाद

नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

विषय - सूची

दो शब्द

यह किताब तहरीके-इस्लामी के एक बड़े आलिमे-दीन मौलाना सैयद हामिद अली (रह॰) (1923-1993 ई॰) ने लिखी है।

चालीस हदीसों के इस मजमूए की ख़ासियतें ये हैं—

1. इसमें सही और भरोसेमन्द हदीसें लिखी गई हैं।

2. कोशिश की गई है कि मुख़्तसर होने के बावजूद इस किताब में दीन की बुनियादी बातों को जमा कर दिया जाए।

3. मुसलमानों की मौजूदा ज़रूरतों और हालात को ख़ास तौर से सामने रखा गया है।

4. हदीसों का मतलब क़ुरआन मजीद और दूसरी सही हदीसों को सामने रखकर बयान किया गया है।

5. यह किताब चालीस हदीसों का मजमूआ है। लेकिन इन हदीसों की तशरीह और व्याख्या में और बहुत-सी हदीसें आ गई हैं।

6. हदीसों और क़ुरआन की आयतों के तर्जमे आसान ज़बान में दिए गए हैं।

7. यह किताब अरबी मतन के साथ भी मौजूद है।

इस किताब को इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि॰) दिल्ली ने तैयार किया है। ट्रस्ट हिन्दी ज़बान में इस्लामी किताबें तैयार करने के मुबारक काम में लगा हुआ है। इस किताब को पेश करके हमें बहुत ख़ुशी हो रही है। हम इसपर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

हमें उम्मीद है कि हदीस की यह किताब सभी लोगों के लिए फ़ायदेमन्द साबित होगी और इसे पढ़ने के बाद अमल का जज़्बा पैदा होगा और लोगों की ज़िन्दगियों में अच्छी और ख़ुशगवार तबदीली आएगी।

अल्लाह से दुआ है कि वह अपनी मेहरबानी से इसके लेखक, अनुवादक और प्रकाशक को दुनिया और आख़िरत में कामयाबी अता फ़रमाए।

नसीम गाज़ी फ़लाही

सेक्रेट्री

इस्लामी साहित्य-ट्रस्ट (रजि़.)

दिल्ली

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रह्मवाला है।'

(1)

दीन के बुनियादी माख़ज़ (स्रोत) और उनका इल्म

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"सबसे अच्छा कलाम अल्लाह की किताब है और सबसे अच्छा तरीक़ा मुहम्मद का तरीक़ा है। और सबसे बुरे काम वे हैं जो (दीन में) नए बढ़ाए हुए काम हैं, और हर नई बात गुमराही है।" (हदीस : मुस्लिम-867)

यह हदीस दीन के बुनियादी माख़ज़ (स्रोत) की तशरीह करती है। अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद सबसे अच्छा कलाम है। इस किताब में सारे ही इनसानों के लिए रहनुमाई है। यह किताब हमेशा बाक़ी रहनेवाली और महफ़ूज़ है। यह रहनुमाई अल्लाह की देन है। इस क़ुरआन में ऐसी तालीमात और हिदायतें दी गई हैं कि अगर इनसान इनके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो वह दुनिया में कामयाबी और आख़िरत में नजात और कामरानी हासिल कर सकता है। इनसान इस रास्ते पर चलकर अल्लाह की ख़ुशी हासिल कर सकता है और उसका प्यारा बन्दा बन सकता है। इस्लाम को समझने, हक़ को उसके अस्ल रूप में पाने और फ़ितने व गुमराही से बचे रहने के लिए ज़रूरी है कि आदमी क़ुरआन मजीद को सच्चे दिल, यकसूई, अक़ीदत और अदब से पढ़े, उसे समझे और अपने-आपको ज़ेहनी और अमली तौर पर उसके हवाले करे और उसकी तालीमात को फैलाने की ज़्यादा-से-ज़्यादा कोशिश करे।

एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"तुममें सबसे बेहतरीन शख़्स वह है जो क़ुरआन (का इल्म) सीखे और उसे सिखाए।" (हदीस : बुख़ारी-5027)

दीन का दूसरा बुनियादी स्रोत अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल॰) की सीरत और तरीक़ा है, जो क़ुरआन की अमली शक्ल और उसकी तशरीह (व्याख्या) है, इसे क़ुरआन से अलग नहीं किया जा सकता। इस्लामी अक़ीदों, इबादतों, अल्लाह के हक़ और लोगों के हक़ की तफ़सीली मालूमात के लिए और इस्लाम के सभी हुक्मों को समझने और उनपर चलने के लिए और दीन के क़ायम होने के सिलसिले में मुकम्मल अमली नक़्शे से वाक़िफ़ होने के लिए नबी (सल्ल॰) की बातों, कामों, कैफ़ियतों और हिदायतों को सामने रखना ज़रूरी है।

इस्लाम के असली और बुनियादी स्रोत यही दो हैं, इसी लिए नबी (सल्ल॰) ने मुसलमानों को वसीयत करते हुए फ़रमाया–

"मैं तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़ रहा हूँ। अगर तुमने इन्हें मज़बूती से पकड़ लिया तो कभी न भटकोगे। (दोनों चीज़ें ये हैं) अल्लाह की किताब, क़ुरआन और उसके नबी का तरीक़ा और सुन्नत।"

(हदीस : मुवत्ता मालिक-2618)

जो कुछ अल्लाह की किताब और नबी (सल्ल॰) की सुन्नत व तरीक़े में है वह इस्लाम[1] है, और जो कुछ उनमें नहीं है और उसे दीन समझकर दीन में बढ़ा दिया गया है, वह नबी (सल्ल॰) के कहने के मुताबिक़ बहुत ही बुरी चीज़ है। ऐसी तमाम बातों को 'बिद्अत' कहते हैं। ये इनसान को गुमराह करनेवाली और दीन की असली शक्ल को बिगाड़ देनेवाली हैं। ऐसी बातें अक़ीदों से मुताल्लिक़ भी हो सकती हैं और इबादतों से भी, अमल, रीति-रिवाजों और तौर-तरीक़ों से भी। एक जगह हदीस में ये अलफ़ाज़ हैं–

1. दीन के दो माख़ज़ और हैं: इजमाअ और क़ियास, मगर ये अस्ल माख़ज़ नहीं हैं। इनकी बुनियाद भी अल्लाह की किताब और रसूल (सल्ल॰) की सुन्नत पर ही है। इस तरह ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन और सहाबा-ए-किराम (रज़ि॰) के अमल की अहमियत भी इसी लिए है कि रसूल (सल्ल॰) के तरीक़े ने इसे अहमियत दी है।

"हर गुमराही की चीज़ (यानी बिद्अत) जहन्नम में ले जानेवाली है।" (हदीस : नसाई-1578)

एक दूसरी हदीस में प्यारे नबी (सल्ल॰) ने यह फ़रमाया—

"जिस किसी ने हमारे इस मामले (दीन) में कोई चीज़ बढ़ाई तो क़बूल न होगी।" (हदीस : बुख़ारी-2697, मुस्लिम-1718)

अफ़सोस कि आजकल के मुसलमान आमतौर से अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत से लापरवाह हैं और बिद्अत और ग़लत रस्मो-रिवाजों का शिकार हैं।

(2)

इस्लाम की बुनियादें

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"इस्लाम की बुनियाद पाँच बातों पर है। इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, बैतुल्लाह का हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।" (हदीस : मुस्लिम-16/21)

इस हदीस में दीन के पाँच बुनियादी सुतून बताए गए हैं, जिनपर पूरे दीन की इमारत खड़ी होती है। अगर ये सुतून न हों तो दीन की इमारत खड़ी नहीं हो सकती। अगर ये क़ायम होकर गिर जाएँ तो दीन की इमारत भी गिर जाएगी। जिसे सच्चा मुसलमान बनना हो और दीन को क़ायम करना हो उसके लिए सबसे बुनियादी काम यह है कि इन पाँचों बुनियादी बातों का पूरी तरह हक़ अदा करे। इन बातों की इसी अहमियत को सामने रखते हुए एक और मौक़े पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इन्हें ही इस्लाम क़रार दिया है।

सबसे पहला सुतून, जिसपर इस्लाम की पूरी इमारत खड़ी होती है, दिल से पक्के यक़ीन के साथ इस बात की गवाही देना है कि अल्लाह के

सिवा कोई मालिक और बन्दगी के लायक़ नहीं, अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी और ग़ुलामी नहीं करनी है, मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और आख़िरी रसूल हैं और अल्लाह की बन्दगी करने के लिए पूरी ज़िन्दगी में नबी (सल्ल०) के हुक्मों पर अमल करना है। इस बात की गवाही देना (अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं) हक़ीक़त में दुनिया का सबसे बड़ा फ़ैसला, सबसे मुश्किल वादा और सबसे अहम एलान है। यह इस बात का एलान है कि बन्दा अल्लाह की बन्दगी के लिए यकसू हो चुका, उसने अल्लाह के सिवा हर माबूद (पूज्य), ताक़त और आसताने से मुँह मोड़ लिया और वह अल्लाह का और सिर्फ़ अल्लाह का हो गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की गवाही देने के साथ ही उसने इस बात का एलान कर दिया कि उसका रहनुमा और लीडर एक ही है और वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं। अल्लाह की बन्दगी करने के लिए वह आप (सल्ल०) ही के कहने पर चलेगा और ज़िन्दगी की रहनुमाई के सारे मामलों और मसलों में आप (सल्ल०) ही की रहनुमाई अपनाएगा। इस फ़ैसले के बाद इनसान की मंज़िल और उसकी दिशा तय हो जाती है। वह अपनी इच्छाओं, दुनिया की रस्मों और रिवाजों, बाप-दादा के तौर-तरीक़ों और इनसानों के ख़ुद बनाए हुए क़ानूनों और निज़ामे-हयात (जीवन-प्रणालियों) की पैरवी करने के बजाय, अल्लाह का बन्दा, रसूल का फ़रमाँबरदार और इस्लाम की पैरवी करनेवाला बनेगा। इसी बुनियादी फ़ैसले पर इस्लाम की पूरी इमारत खड़ी होती है।

नमाज़ दिन में पाँच बार इनसान का ताल्लुक़ अल्लाह से जोड़ती है और उसे ज़िन्दा और मज़बूत करती है। अल्लाह का ख़ौफ़ और उसकी मुहब्बत पैदा करती है और अमली तौर से यह सबक़ सिखाती है कि इनसान अल्लाह का बन्दा है और उसे इनफ़िरादी (व्यक्तिगत) और इजतिमाई दोनों हालतों में बन्दा बनकर ही रहना है।

ज़कात दुनिया की मुहब्बत को दिल से निकालती है। क्योंकि दुनिया

की मुहब्बत ही बहुत सारे फ़ितनों की जड़ है। ज़कात अल्लाह की मुहब्बत और आख़िरत की फ़िक्र पैदा करती है, दीन के रास्ते में क़ुरबानी पर उभारती है और लोगों के हक़ और अधिकारों की अहमियत सिखाती है।

रोज़ा इसलिए है कि मुसलमान अल्लाह की नाफ़रमानी से बच सकें। रोज़ा लगातार एक महीने तक इनसान के नफ़्स का तज़किया (शुद्धीकरण) करता है और उसे गुनाहों से बचाता और गुनाहों से बचने की ताक़त देता है। रोज़ा उसे नेकियों पर उभारता, अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करने का दिल में जज़बा पैदा करता, ग़रीबों की हमदर्दी पर उभारता और अल्लाह के रास्ते में मुसीबतें झेलने का आदी बनाता है।

अल्लाह के घर काबा के हज का अगर हक़ अदा किया जाए तो वह इनसान की काया पलट करने, अल्लाह से उसे जोड़ देने और उसके दिल में अल्लाह, उसके रसूल और दीन से बहुत ज़्यादा मुहब्बत पैदा करने का बड़ा ही असरदार नुस्ख़ा है।

(3)

बड़े गुनाह

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"बड़े गुनाह ये हैं— अल्लाह के साथ (किसी को) शरीक करना। माँ-बाप का हुक्म न मानना। किसी इनसानी जान को क़त्ल करना और झूठी गवाही देना।" (हदीस : बुख़ारी-2653)

कबीरा या बड़ा गुनाह हर वह काम है जिससे अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) ने साफ़ तौर से मना किया हो और उसे हराम ठहराया हो। क़ुरआन मजीद और हदीस में बहुत-से कामों से रोका गया है, जिनकी लिस्ट बहुत लम्बी है। ऊपर की हदीस में सिर्फ़ उन गुनाहों को बयान किया गया है, जो तमाम गुनाहों में ज़्यादा बड़े गुनाह हैं। इस हदीस की एक दूसरी रिवायत में झूठी गवाही के बजाय झूठी क़सम का ज़िक्र है।

एक और हदीस में है—

एक आदमी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! (अल्लाह की निगाह में) सबसे बड़ा गुनाह क्या है?" फ़रमाया, "तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराओ, हालाँकि अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया है।" पूछा, "फिर कौन-सा?" फ़रमाया, "यह कि तुम औलाद को क़त्ल कर दो इस डर से कि वह तुम्हारे खाने में शरीक होगी।" पूछा, "फिर कौन-सा?" फ़रमाया, "तुम अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना (बदकारी) करो।"

(हदीस : बुख़ारी-7532, मुस्लिम-86)

एक दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया – "सात घातक और तबाह कर देनेवाले गुनाहों से बचो।" सहाबा (रज़ि॰) ने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल! वे कौन-से हैं?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, नाहक़ क़त्ल करना, सूदख़ोरी, यतीम का माल खाना, जिहाद के मौक़े पर मैदान से भाग खड़े होना और पाक दामन, ईमानवाली और भोली-भाली औरतों पर ज़िना (व्यभिचार) की तुहमत लगाना।" (हदीस : बुख़ारी-6857, मुस्लिम-89)

एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया – "ज़िना करनेवाला जब ज़िना करता है तो ईमान की हालत में ज़िना नहीं करता। चोरी करनेवाला जब चोरी करता है तो वह ईमान की हालत में चोरी नहीं करता और जब वह शराब पीता है तो ईमान की हालत में शराब नहीं पीता और जब वह दिन-दहाड़े कोई क़ीमती चीज़ लूटता है तो वह ईमान की हालत में लूटमार नहीं करता और जब तुममें से कोई आदमी धोखा देता है तो ईमान की हालत में धोखा नहीं देता। तो तुम इन सब गुनाहों से दूर भागो, दूर भागो।" (हदीस : मुस्लिम-57)

इसी हदीस की एक और रिवायत में जानदार को क़त्ल करने का ज़िक्र हुआ है।

इसी तरह वे सब बातें जिन्हें हदीस में कुफ़्र (इनकार), निफ़ाक़ (कपट) या फ़िस्क़ (नाफ़रमानी) कहा गया है या जिनपर जहन्नम की सज़ा सुनाई गई है, या जिन मुजरिमों के बारे में कहा गया है कि वे जन्नत में दाख़िल न हो सकेंगे, या अल्लाह उनसे नाराज़ होगा और उनपर रह्म न करेगा, ऐसे सारे काम कबीरा गुनाह या महापाप हैं। इनमें से कुछ को हम आगे बयान करेंगे।

(4)

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) की फ़रमाँबरदारी

अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने फ़रमाया—

"मेरी उम्मत के सारे लोग जन्नत में जाएँगे, सिवाय उन लोगों के जो इनकार करेंगे।" लोगों ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! (आपकी उम्मत में) इनकार करनेवाला कौन होगा?" नबी (सल्ल.) ने जवाब दिया, "जिसने मेरी फ़रमाँबरदारी की वह जन्नत में जाएगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो बेशक उसने (मेरा) इनकार किया।" (हदीस : बुख़ारी-7280)

इस हदीस से तीन बातें मालूम होती हैं। एक यह कि अल्लाह के रसूल (सल्ल.) की पूरी उम्मत जन्नत में जाएगी। दूसरी बात यह कि जन्नत में वही लोग जाएँगे जो अल्लाह के रसूल (सल्ल.) के हुक्म पर चलनेवाले हैं। इसको दूसरे लफ़्ज़ों में ऐसे भी कह सकते हैं कि प्यारे नबी (सल्ल.) की जानते-बूझते नाफ़रमानी करनेवाले और उसपर अड़े रहनेवाले जन्नत में नहीं बल्कि जहन्नम में जाएँगे और तीसरी बात यह मालूम होती है कि रसूल (सल्ल.) की जानते-बूझते नाफ़रमानी करना, उसपर अड़े रहना और इसी हालत पर राज़ी रहना और अपने अन्दर कोई बेचैनी न पाना, रसूल (सल्ल.) का इनकार करने के बराबर है, चाहे ऐसा आदमी ज़बान से ईमान, इस्लाम, ख़ुदा और रसूल की मुहब्बत का कितना ही दावा क्यों न करे। ईमान की असली कसौटी अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानना है। चर्ब ज़बानी और ख़ाली-ख़ूली बातों से कोई काम नहीं बनता।

(5)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे हैं

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"मुझे हद से आगे न बढ़ाओ। जिस तरह ईसाइयों ने मरयम के बेटे ईसा को हद से आगे बढ़ा दिया। मैं तो उसका बन्दा ही हूँ। इसलिए मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल ही कहो।"

(हदीस : बुख़ारी-3445)

इस हदीस से यह मालूम हुआ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के आख़िरी रसूल और अपनी सारी फ़ज़ीलतों के बावजूद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल ही हैं। वे न तो अल्लाह हैं, न अल्लाह के बेटे, न वे अल्लाह के अवतार हैं कि इनसानी शक्ल में अल्लाह आ गया हो और न उनमें ख़ुदाई ताक़त और शान है। वे तो इनसान हैं, अल्लाह के बन्दे और ग़ुलाम हैं, अलबत्ता अल्लाह के सबसे पसन्दीदा बन्दे हैं और आख़िरी नबी हैं।

जिस तरह ईसाइयों ने ईसा (अलैहि॰) को बिन बाप का बेटा होने की वजह से कभी अल्लाह का बेटा कहा, कभी अल्लाह का अवतार कहा, कभी उन्हें तीन ख़ुदाओं — बाप, बेटा, रूहुल-क़ुदुस — में से एक ख़ुदा बताया और कभी उन्हें अल्लाह ही बना डाला और इस तरह का अक़ीदा अपनाकर क़ुरआन और हदीस के लफ़्ज़ों में शिर्क में पड़ गए। अगर मुसलमान भी मुहम्मद (सल्ल॰) के बारे में इस क़िस्म का अक़ीदा रखेंगे कि वे 'अहमद बिना मीम' (यानी अहद, ख़ुदा) हैं, या यह ख़याल करेंगे कि ख़ुदा इनसानी शक्ल इख़्तियार करके मुहम्मद (सल्ल॰) की शक्ल में ज़ाहिर हुआ है या अल्लाह के रसूल को अल्लाह का बन्दा और ग़ुलाम के बजाय ख़ुदाई दरजा देंगे और उनमें ख़ुदाई ताक़त और शान मानेंगे तो यह ईसाइयों जैसा ही शिर्क होगा।

(6)

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"तुममें से कोई आदमी उस वक़्त तक ईमानवाला नहीं हो सकता, जब तक कि मैं उसे उसकी औलाद, उसके बाप और सारे इनसानों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ।"

(हदीस : बुख़ारी-15, मुस्लिम-44)

क़ुरआन में है –

"जो ईमानवाले हैं, वे सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत करते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-2 बक़रा, आयत-165)

कुछ दूसरी आयतों, इस हदीस और दूसरी कुछ हदीसों से भी मालूम होता है कि ईमानवाला होने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) उसकी निगाह में पूरी दुनिया और दुनिया की सारी चीज़ों से बढ़कर प्यारे हों, यहाँ तक कि औलाद, माँ-बाप और सारे इनसानों से भी ज़्यादा प्यारे।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से सबसे ज़्यादा मुहब्बत होने का एक मतलब यह है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) की नसीहतों और हुक्मों को मोमिन अपने दिल की गहराई से चाहे और उनकी क़द्र करे। वह अपनी औलाद, माँ-बाप और सारे इनसानों के फ़ायदों और उनकी ख़ुशी और नाख़ुशी का ख़याल न करके प्यारे नबी (सल्ल॰) की फ़रमाँबरदारी में जौक़ और शौक़ से लग जाए और पूरे तौर पर उनकी पैरवी करने लगे।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत का दूसरा मतलब यह है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) की ज़िन्दगी, आप (सल्ल॰) की सीरत, आप (सल्ल॰) का नमूना (उसवा), आप (सल्ल॰) की सुन्नत, आप (सल्ल॰) का तरीक़ा और आप (सल्ल॰) ने ज़िन्दगी की जो राह अपनाई, वह राह हमें दुनिया

के तमाम तरीक़ों और रविश (नीति) से ज़्यादा प्यारी हो और हम प्यारे नबी (सल्ल॰) की सुन्नत, आप (सल्ल॰) के तरीक़े और आप (सल्ल॰) की ज़िन्दगी को नमूना मानकर अपनी ज़िन्दगी को उसके मुताबिक़ ढालने की कोशिश करें और प्यारे नबी (सल्ल॰) के नक़्शे-क़दम पर चलने की जिद्दो-जुहद करें।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत का तीसरा मतलब यह है कि जो दीन वे लेकर आए थे, जो उनको अपनी जान से ज़्यादा प्यारा था, जिसपर अमल करने, जिसे फैलाने और जिसका बोलबाला करने के लिए उन्होंने अपने-आपको क़ुरबान कर दिया था, जिस दीन के लिए उन्होंने बड़ी-से-बड़ी मुसीबतें झेलीं, भूखे-प्यासे रहे, घर-बार और वतन छोड़ा, क़त्ल के ख़तरे से दोचार हुए, घायल और लहूलुहान हुए, जिसके लिए आप (सल्ल॰) ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक जिद्दो-जुहद, अनथक जिद्दो-जुहद करते रहे, वही दीन हमें भी अपनी जान से ज़्यादा प्यारा हो और हम भी उसपर चलने, उसे फैलाने और उसे ग़ालिब करने के लिए अपने-आपको लगा दें। इसके लिए हर तरह की मुसीबतें सहें और जान-माल, औलाद, वतन, मुस्तक़बिल, सुख-चैन, हर चीज़ की क़ुरबानी दें।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से मुहब्बत का चौथा मतलब यह है कि हम आप (सल्ल॰) के लिए, आप (सल्ल॰) की औलाद और साथियों के लिए और उन सबके लिए दुआएँ करें, जो आप (सल्ल॰) के रास्ते पर चलें और आप (सल्ल॰) के दीन को फैलाने और ग़ालिब करने के लिए कोशिश करें। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने हमपर बहुत एहसान किए हैं। इन एहसानों का हम इसके सिवा कोई बदला नहीं दे सकते कि अल्लाह से दुआ करें कि वह आप (सल्ल॰) पर अपनी रहमत नाज़िल करे। नमाज़ के ख़त्म होने से पहले दुरूद पढ़ना इसी लिए सुन्नत है। नमाज़ के अलावा जब भी मौक़ा मिले हमें नबी (सल्ल॰) पर और आप (सल्ल॰) के ख़ानदान पर — और वे सब आप (सल्ल॰) के ख़ानदान में हैं जो आप (सल्ल॰) के मिशन को अपनाएँ — दुरूद और सलाम भेजें क्योंकि यह मुहब्बत की अलामत (पहचान) भी है और इससे मुहब्बत और ज़्यादा बढ़ती भी है।

(7)

मुनाफ़िक़

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया —

"मुनाफ़िक़ की मिसाल उस बकरी की तरह है, जो दो गल्लों के बीच चक्कर लगाती रहती हो, कभी इस गल्ले में जाती हो और कभी उस गल्ले में।" (हदीस : मुस्लिम-2784)

मोमिन अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात (गुणों), अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की रिसालत, इस्लाम की सच्चाई और आख़िरत की हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी पर पक्का यक़ीन रखता है। इसी लिए वह अल्लाह की बन्दगी, नबी (सल्ल०) की फ़रमाँबरदारी, इस्लाम की पैरवी और अल्लाह की ख़ुशी और आख़िरत की नजात की राह को सच्चे दिल से और ख़ुलूस के साथ अपना लेता है और सब धर्मों, क़ानूनों और विचार धाराओं से मुँह मोड़कर इस्लाम के लिए यकसू हो जाता है। उसका ताल्लुक़ सिर्फ़ उस गरोह से होता है जो इस्लाम की पैरवी, उसकी दावत और उसको क़ायम करने के लिए वुजूद में आता है। इसके ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ ईमान और यक़ीन से महरूम, शक और शुब्हे का शिकार होता है। कभी वह अल्लाह की बन्दगी करता है तो कभी नफ़्स (इच्छा) और शैतान की बन्दगी में लग जाता है। कभी रसूल का कहा मानता है तो कभी अपने जैसे इनसानों के कहने पर चलने लगता है। कभी इस्लाम की पैरवी करता है और कभी इनसानों के अपने बनाए हुए तरीक़ों, दस्तूरों और विचार-धाराओं का अलम्बरदार बनकर खड़ा हो जाता है। कभी वह मुसलमानों का साथ देता है और कभी दीन और मिल्लत के मफ़ाद (हितों) का ख़याल न रखते हुए कुफ़्र और शिर्क करनेवालों से मामला कर लेता है। क़ुरबानी कहीं देना नहीं चाहता। फ़ायदे हर जगह बटोरना चाहता है। यह है मुनाफ़िक़ (कपटाचारी), जिसका न दिल साफ़ है और न वह यकसू ही है, वह अपना दुश्मन आप बना हुआ है।

(8)

निफ़ाक़ की पहचान

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"चार आदतें जिस आदमी में हों वह ख़ालिस मुनाफ़िक़ है और अगर किसी आदमी में उनमें से कोई एक आदत हो तो उसमें निफ़ाक़ की एक आदत होगी, यहाँ तक कि उसे छोड़ दे। (वे आदतें यह हैं) – (1) जब अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे। (2) बात करे तो झूठ बोले। (3) वादा करे तो उसको पूरा न करे । (4) किसी से झगड़े तो गालियों पर उतर आए (या हक़ व इनसाफ़ और नेकी से हट जाए)।" (हदीस : बुख़ारी-34)

निफ़ाक़ का ताल्लुक़ हक़ीक़त में दिल से है कि दिल ईमान और यक़ीन से ख़ाली हो, शक और शुब्हे से भरा हो। लेकिन ईमान की तरह इसकी भी कुछ ज़ाहिरी पहचान हैं, जिनसे निफ़ाक़ का पता चल सकता है।

निफ़ाक़ की एक पहचान पिछली हदीस में बयान हुई है और चार अलामतें इस हदीस में बताई गई हैं।

इस हदीस से साफ़ ज़ाहिर है कि धोखा, ख़ियानत, झूठ बोलना, वादा पूरा न करना और गाली-गलौच (या नाइनसाफ़ी) निफ़ाक़ की आदतें हैं और जो आदमी भी इन्हें अपनाए हुए है, वह पक्का मुनाफ़िक़ है। इसके बरख़िलाफ़ अमानतदारी, सच्चाई, वादा पूरा करना और सुलह और जंग, हर हालत में इनसाफ़ और तहज़ीब व शराफ़त अपनाना, ईमान की बुनियादी ख़ूबियाँ हैं। आदमी उतना ही ईमानवाला है, जितनी उसमें ये ख़ूबियाँ पाई जाती हैं।

(9)

सच्चा मुसलमान

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"मुस्लिम वह है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमानों को कोई नुक़सान न पहुँचे और मुहाजिर वह है जो ऐसे कामों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने रोका है।" (हदीस : बुख़ारी-10)

इस हदीस से पता चलता है कि सच्चा मुसलमान और सच्चा मुहाजिर कौन है। सच्चा मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से किसी मुसलमान का हक़ न मारा जाए। वह किसी मुसलमान की न पीठ-पीछे बुराई करे, न चुग़ली खाए, न ताने दे, न मज़ाक़ उड़ाए, न इलज़ाम और बुहतान लगाए, न गाली दे और न कोई ऐसी बात कहे जिससे उसे दुख पहुँचे। इसी तरह वह अपने हाथ, अपनी ताक़त और अपने असर को किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ इस्तेमाल न करे। वह उसका दुश्मन और बुरा चाहनेवाले के बजाय उसका भला चाहनेवाला हो।

मुहाजिर उसको कहते हैं जो अल्लाह की ख़ुशी के लिए अपने वतन को छोड़ देता है कि वहाँ रहकर उसके लिए दीन पर चलना और दीन का प्रचार करना बड़ा मुश्किल, बल्कि नामुमकिन हो गया होता है। हिजरत बहुत बड़ी नेकी है, बहुत बड़ी क़ुरबानी है और किसी के सच्चा मोमिन होने का बहुत बड़ा सुबूत है। लेकिन वतन या घर-बार छोड़ना हिजरत का ऊपरी रूप है। उसकी रूह यह है कि मोमिन हर उस काम को छोड़ दे जो अल्लाह को नापसन्द हो और जिससे उसने रोका हो। अगर यह बात पाई जाती है तो घर-बार न छोड़ने के बाद भी मोमिन को मुहाजिर का दरजा हासिल रहता है। वरना घर-बार छोड़ने के बावजूद भी वह मुहाजिर नहीं।

(10)

सच्चा मोमिन

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"तुममें से कोई आदमी उस वक़्त तक मोमिन नहीं होगा जब तक कि वह अपने भाई के लिए वही कुछ न चाहे जो अपने लिए चाहता है।" (हदीस : बुख़ारी-13, मुस्लिम-45)

इस हदीस में बताया गया है कि सच्चा मोमिन कौन होता है। हर इनसान अपना भला चाहता है और हर चीज़ और हर आदमी से बढ़कर अपना भला चाहता है। कभी भी अपना बुरा नहीं चाहता। उसे हमेशा अपनी कामयाबी और सफलता की फ़िक्र लगी रहती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के कहने का मतलब यह है कि जिस तरह इनसान अपना भला चाहता है, बुरा नहीं, उसी तरह हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह दूसरे मुसलमान का भला चाहे, बुरा नहीं। जिस तरह वह अपनी तरक़्क़ी और कामयाबी चाहता है, उसी तरह उसे दूसरे मुसलमान के लिए जो हक़ीक़त में उसका भाई है, कामयाबी और तरक़्क़ी चाहनी चाहिए, उसकी कामयाबी से ख़ुश होना चाहिए और उसकी नाकामी से दुख और रंज होना चाहिए। जो आदमी दूसरे मुसलमान के दुख और मुसीबत पर ख़ुश हो, वह मुसलमान नहीं।

आख़िरत की कामयाबी सबसे बड़ी कामयाबी है और वहाँ की नाकामी सबसे बड़ी नाकामी। बिगड़े हुए मुसलमानों की सबसे ज़्यादा भलाई इसी में है कि उन्हें सच्चा मुसलमान बनाने की कोशिश की जाए, ताकि आख़िरत में हमेशा रहनेवाली कामयाबी उनके हिस्से में आ सके।

ईमानवालों का आपसी ताल्लुक़

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"मोमिन मोमिन के लिए दीवार की तरह है कि उसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को मज़बूत बनाता है।" फिर आप (सल्ल॰) ने अपनी उंगलियों को एक-दूसरे में डाला (कि इस तरह)।

(हदीस : बुख़ारी-6026)

ईमानवालों के दिल आपस में जुड़े होते हैं। उनमें मुहब्बत और हमदर्दी के गहरे ताल्लुक़ होते हैं। वे बहुत ही मुत्तहिद (संगठित) और मुनज़्ज़म होते हैं, जैसे दीवार की ईंटें आपस में जुड़ी हुई होती हैं।

बिखरी हुई ईंटें जब जुड़कर दीवार बन जाती हैं तो वे बहुत मज़बूत हो जाती हैं। हर ईंट दूसरी ईंट से मिलकर उसे और ख़ुद को ताक़त पहुँचाती है और इस तरह बेशुमार ईंटों की ताक़त अपने लिए जुटा लेती है। यही हाल ईमानवालों का है। वे आपसी भाईचारे, मुहब्बत और नज़्म व इजतिमाइयत (अनुशासन और संगठन) से दूसरों को ताक़त पहुँचाते हैं और ख़ुद भी ताक़त हासिल करते हैं। मोमिन ज़िन्दगी के सफ़र में अकेला नहीं होता। अनेकों ईमानवाले उसके मददगार और दुख-दर्द में उसके साथ होते हैं। सच्चे इस्लामी समाज की तारीफ़ करते हुए प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"ईमानवालों की आपसी मुहब्बत, रहमत और हमदर्दी की मिसाल बदन की तरह है कि अगर बदन के किसी भी हिस्से में दर्द होता है तो पूरा जिस्म बुख़ार में जलकर और जागकर उसकी मदद को दौड़ पड़ता है।" (हदीस ; मुस्लिम-2586)

लेकिन यह बात उसी वक़्त हो सकती है, जब इस्लामी समाज की नींव अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल॰) की फ़रमाँबरदारी पर टिकी हो, ख़ुदा का बोलबाला करना उसका मक़सद हो और उसी मक़सद की बुनियाद पर वह मुनज़्ज़म (संगठित) और मुत्तहिद हो।

(12)

माँ-बाप की ख़िदमत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"उसकी नाक मिट्टी में मिले! उसकी नाक मिट्टी में मिले! उसकी नाक मिट्टी में मिले!" पूछा गया : "किसकी ऐ अल्लाह के रसूल?" फ़रमाया : "जिसने अपने माँ-बाप दोनों या उनमें से किसी एक का बुढ़ापा पाया, फिर जन्नत में न जा सका।"

(हदीस : मुस्लिम-2551)

इस हदीस से मालूम होता है कि जिसने अपने माँ-बाप की ख़िदमत नहीं की, वह जन्नत में नहीं जाएगा और जिसने उनकी ख़िदमत अल्लाह को ख़ुश करने के लिए की, वह जन्नत का हक़दार होगा।

हदीस में बुढ़ापे की बात इसलिए आई है, क्योंकि माँ-बाप को बुढ़ापे में ख़िदमत की ज़्यादा ज़रूरत होती है और बुढ़ापे की वजह से उनका मिज़ाज भी चिड़चिड़ा हो जाता है। चूँकि वे इस हालत में बेकार होते हैं और उन्हें ख़िदमत की ज़रूरत होती है, इसलिए वे औलाद को बोझ मालूम होते हैं। एक और हदीस है –

एक आदमी ने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! औलाद पर माँ-बाप का क्या हक़ है?" आप (सल्ल॰) ने फरमाया, "वे दोनों तुम्हारी जन्नत और तुम्हारी जहन्नम हैं।" (हदीस : इब्ने-माजा-3662)

यानी उनकी ख़िदमत करने से जन्नत मिलेगी और नाफ़रमानी से जहन्नम।

एक हदीस में यह भी है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"सबसे बड़ी नेकी यह है कि इनसान अपने बाप के बाद अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक और बरताव करे।"

(हदीस : मुस्लिम-2552)

यानी माँ-बाप की ख़िदमत के साथ-साथ उनके नातेदारों और उनसे मुहब्बत करनेवालों से अच्छा सुलूक करना भी औलाद पर हक़ है।

(13)

औलाद और घरवालों की ज़िम्मेदारी

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"सुनो, तुममें से हर आदमी ज़िम्मेदार और निगराँ है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछगछ होगी।"

(हदीस : बुख़ारी-7138, मुस्लिम-1829)

यह एक लम्बी हदीस के शुरू का हिस्सा है। पूरी हदीस इस तरह है—

"सुनो, तुममें से हर शख़्स ज़िम्मेदार और निगराँ है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछगछ होगी। तो इमाम (सरदार) जो लोगों पर हाकिम है, उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछगछ होगी। मर्द अपने घर के लोगों का ज़िम्मेदार और निगराँ है, उससे उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछगछ होगी। औरत अपने शौहर के घर के लोगों और उसकी औलाद की ज़िम्मेदार और निगराँ है उससे उनके बारे में सवाल होगा। ग़ुलाम अपने मालिक के माल का निगराँ (रक्षक) है, उससे उसके बारे में पूछा जाएगा। सुन लो, इस तरह तुममें से हर

आदमी ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में पूछा जाएगा।" (हदीस : बुख़ारी-7138)

मालूम हुआ कि जिस आदमी की ज़िम्मेदारी और निगरानी में ज़ो चीज़ें या जो लोग दिए गए हैं, क़ियामत के दिन वह आदमी उन सबके बारे में जवाबदेह होगा कि उनके हक़ ठीक-ठीक अदा किए या नहीं। अमानत में ख़ियानत तो नहीं की और उनकी इस्लाह और तरबियत की कोशिश की या नहीं। यही पूछगछ हुकूमत के ज़िम्मेदारों से उनकी जनता के बारे में होगी। यही पूछगछ हर आदमी से उसकी औलाद और घर के दूसरे लोगों के बारे में होगी और यही पूछगछ हर औरत से उसकी औलाद और घर के माल और सामान के बारे में होगी।

(14)

बीवी से अच्छा सुलूक

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"दुनिया (की सब चीज़ें) कुछ दिन का सामान है और इस सामान में सबसे अच्छी चीज़ वह बीवी है जो नेक और (शौहर के लिए) बेहतर हो।" (हदीस : मुस्लिम-1467)

औरत के बारे में मज़हबों का आम रुझान यह है कि औरत एक नफ़रत के लायक़ चीज़ और गुनाह की जड़ है। इसके ख़िलाफ़ पश्चिमी संस्कृति में औरत को सिर्फ़ काम-वासना और ख़्वाहिशों को हासिल करने का एक ज़रिआ समझ लिया गया है, इसी लिए वहाँ बेशर्मी और अश्लीलता आम हो गई है। ख़ानदान और समाज का बन्धन टूटकर बिखर चुका है। इस्लाम ने इन दोनों ग़लत रास्तों से हटकर नेक, पाकदामन और शौहर के मिज़ाज के मुताबिक़ बीवी को दुनिया की सबसे बेहतरीन नेमत कहा है। इस तरह औरत का दरजा बहुत ऊँचा करके उसे दुनिया में क़द्र के क़ाबिल बना दिया।

एक दूसरी हदीस में नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"औरतों के बारे में अच्छे सुलूक की वसीयत क़बूल करो। वे पसली से बनी हैं और सबसे ऊँची पसली सबसे ज़्यादा टेढ़ी होती है। अगर पसली को सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसे तोड़ दोगे और उसे उसके हाल पर छोड़ दोगे तो वह टेढ़ी रहेगी। तो औरतों के बारे में अच्छे सुलूक की वसीयत क़बूल करो।" (हदीस : बुख़ारी-5186)

मतलब यह है कि औरत की फ़ितरत पसली की तरह है। जिस तरह पसली फ़ितरी तौर से टेढ़ी होती है और उसका टेढ़ा होना ही सही और फ़ायदेमन्द है, वह सीधी नहीं हो सकती। सीधी की जाएगी तो टूट जाएगी और बेकार हो जाएगी। इसी तरह मर्द के मुक़ाबले में औरत को ज़्यादा जज़बाती बनाया गया है और उसका जज़बाती होना ही फ़ायदेमन्द और मुनासिब है। अगर औरत ज़्यादा जज़बाती न होती तो वह उन ज़िम्मेदारियों का बोझ न उठा पाती जो उसपर डाली गई हैं। बच्चे को दुख झेलकर नौ महीने तक पेट में रखना, फिर जान पर खेलकर उसे जन्म देना, फिर सालों तक उसकी परवरिश में बहुत ज़्यादा परेशानी सहन करना, घर की देखभाल, काम-काज और शौहर के नाज़ उठाने के सिलसिले में मुसीबतें उठाना। ये सब काम गहरे जज़बात के बिना मुमकिन नहीं और अपने इसी जज़बात की वजह से वह ठंडे दिल और दिमाग़ से कम काम कर पाती है। इससे मर्द के लिए कुछ उलझनें ज़रूर पैदा होती हैं, मगर यह औरत की फ़ितरी ख़ुसूसियत है, जिसे बदला नहीं जा सकता। यह चीज़ एक पहलू से बहुत बड़ी ख़ूबी है और एक पहलू से बहुत बड़ी कमज़ोरी। मर्द को औरत से मामला करते वक़्त उसकी इस कमज़ोरी का ख़याल रखना चाहिए और उससे ज़्यादा-से-ज़्यादा अच्छा सुलूक करना चाहिए। इस तरह वह उसके जज़बात को सही दिशा दे सकेगा। सख़्ती करके वह उसे खो तो सकता है, मगर उसका सुधार नहीं कर सकता। एक दूसरी हदीस में है –

"कोई मोमिन मर्द (शौहर) किसी मोमिन औरत (बीवी) से नफ़रत न करे। अगर उसकी एक आदत उसे नापसन्द होगी तो दूसरी उसे अच्छी लगेगी।" (हदीस : मुस्लिम-1469)

औरत की नापसन्दीदा बातों को छोड़कर उसकी पसन्दीदा बातों को देखना चाहिए। एक और हदीस में है–

"तुममें से कोई आदमी अपनी बीवी को ग़ुलाम की तरह न मारे, फिर दिन गुज़रने पर उससे सोहबत (सहवास) करने के लिए तैयार हो जाए।" (हदीस : बुख़ारी-5204)

बीवी से मामला करते वक़्त याद रखना चाहिए कि वह नौकरानी नहीं बीवी है और उससे अस्ल रिश्ता मुहब्बत और क़ुरबत (रिश्तेदारी) का है। यह नहीं कि बान्दी-ग़ुलाम की तरह उसे मारना शुरू कर दे। एक और जगह नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"तुममें सबसे अच्छा आदमी वह है जो अपने घरवालों के लिए अच्छा हो, और मैं तुम सबसे ज़्यादा अपने घरवालों के साथ अच्छा सुलूक करनेवाला हूँ।"

(हदीस : तिरमिज़ी-3895, इब्ने-माजा-1977)

(15)

शौहर का कहना मानना

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"कोई आदमी अपनी बीवी को बिस्तर पर बुलाए और वह (आने से) मना कर दे, जिससे वह (आदमी) नाराज़ हो जाए तो फ़रिश्ते सुबह तक उस औरत को धुतकारते रहेंगे।"

(हदीस : बुख़ारी-3237, मुस्लिम-1436)

एक और हदीस में इसी बात को प्यारे नबी (सल्ल॰) ने इस तरह फ़रमाया –

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! कोई मर्द अगर अपनी बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वह इनकार कर दे तो आसमानवाला उस औरत से उस वक़्त तक नाराज़ रहेगा जब तक मर्द उससे राज़ी न हो जाए।"

(हदीस : मुस्लिम-1436)

एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"किसी औरत को इस हालत में मौत आ जाए कि उसका शौहर उससे राज़ी और ख़ुश हो तो वह जन्नत में जाएगी।"

(हदीस : तिरमिज़ी-1161, इब्ने-माजा-1854)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जब मर्द अपनी बीवी को अपनी ज़रूरत के लिए बुलाए तो उसे (फ़ौरन) उसके पास आना चाहिए, चाहे औरत चूल्हे पर खाना ही पका रही हो।" (हदीस : तिरमिज़ी-1160)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि बीवी की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपने शौहर को ख़ुश और राज़ी रखे और हर जाइज़ काम में उसका कहना माने, क्योंकि यही उसके लिए दुनिया और आख़िरत दोनों की कामयाबी का रास्ता है।

नाते-रिश्ते का ख़याल

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"नाते-रिश्ते को काटनेवाला जन्नत में नहीं जाएगा।"

(हदीस : बुख़ारी-5984, मुस्लिम-2556)

क़ुरआन मजीद में अल्लाह की बन्दगी पर ज़ोर देने के फ़ौरन बाद आमतौर से बन्दों के हक़ अदा करने पर ज़ोर दिया गया है और उसकी शुरुआत माँ-बाप और नातेदारों के हक़ों से की गई है। जैसा कि फ़रमाया–

"अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, ग़रीबों के साथ, नातेदार पड़ोसी के साथ, अजनबी पड़ोसी के साथ, साथी के साथ, मुसाफ़िर के साथ और अपने ग़ुलामों के साथ अच्छा सुलूक करो।"

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-36)

हदीस में नातेदारों के हक़ को बहुत अहमियत दी गई है और बताया गया है कि जो आदमी नातेदारों से नाता तोड़ लेता है और उनके हक़ अदा नहीं करता, वह जन्नत में न जा सकेगा। रिश्तेदारों के हक़ पर ज़ोर देते हुए और उसे वाज़ेह करते हुए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"रिश्तों-नातों को जोड़नेवाला वह शख़्स नहीं है जो बदले में रिश्ते-नाते जोड़ता हो, बल्कि वह है कि जब उसके नातेदार उस से नाता तोड़ लें और उसके हक़ अदा न करें तो वह उनसे ताल्लुक़ात जोड़े और उनके हक़ अदा करे।"

(हदीस : बुख़ारी-5991)

(17)

यतीमों की परवरिश

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जो आदमी यतीम की किफ़ालत (खाने-पीने वग़ैरा का इन्तिज़ाम) करेगा, वह जन्नत में मेरे साथ इस तरह रहेगा।" आप (सल्ल॰) ने अंगूठे के पास की उँगली और बीच की उँगली से इशारा किया और इन दोनों के बीच थोड़ा-सा फ़ासला रखा।

(हदीस : बुख़ारी-5304)

दुनिया में सबसे ज़्यादा बुरा सुलूक यतीमों के साथ होता है। दूसरे लोग तो यतीम को नफ़रत की नज़र से देखते और उन्हें धक्के देते ही हैं, यतीमों के सरपरस्त भी उनसे अच्छा सुलूक नहीं करते, बल्कि उनके माल और जायदाद को हड़प लेते हैं। यतीमख़ानों में भी उनके साथ बहुत ही नफ़रत और मशक़्क़त-भरा सुलूक होता है। उनके ज़रिए से भीख मँगवाई जाती है और यतीमख़ानों के ज़िम्मेदार उस भीख को भी ख़ुद खा जाते हैं। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने फ़रमाया –

"यक़ीनन वे लोग जो यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ़ आग ही भर रहे हैं और वे यक़ीनन (दोज़ख़ की) भड़कती हुई आग में दाख़िल होंगे।"

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-10)

हदीस में यतीमों की देखभाल और उनके साथ अच्छे सुलूक की फ़ज़ीलत (बड़ाई) बयान की गई है। यतीम अपना नातेदार हो या अजनबी, जो भी उसकी ज़िम्मेदारी लेगा, वह जन्नत में नबी (सल्ल॰) से इतना क़रीब होगा जैसे बीच की उँगली और तर्जनी (अंगूठे के पास की उँगली), जबकि उनमें ज़रा-सी दूरी हो।

(18)

पड़ोसी के साथ अच्छा बरताव

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"ख़ुदा की क़सम वह ईमानवाला नहीं! ख़ुदा की क़सम वह ईमानवाला नहीं! ख़ुदा की क़सम वह ईमानवाला नहीं!" पूछा गया, "ऐ अल्लाह के रसूल! कौन (ईमानवाला नहीं है)?" प्यारे नबी (सल्ल॰) ने जवाब दिया, "जिसका पड़ोसी उसकी शरारत और बुराई से महफ़ूज़ न हो।" (हदीस : बुख़ारी-6016)

क़ुरआन मजीद में ख़ुदा की बन्दगी और शिर्क से पाक बन्दगी पर ज़ोर देने के साथ-साथ बहुत-सी जगहों पर लोगों के हक़ अदा किए जाने पर ज़ोर दिया गया है, जिससे यह बात वाज़ेह होती है कि दीन के दो बुनियादी हिस्से हैं। एक का ताल्लुक़ अल्लाह के हक़ से है और दूसरे का उसके बन्दों के हक़ से। ये दोनों ही बड़े अहम हैं और इनमें से किसी की अहमियत एक-दूसरे से कम नहीं, और जहाँ बन्दों के हक़ बयान हुए हैं, वहीं माँ-बाप, रिश्तेदारों, यतीमों और ग़रीबों के साथ-साथ पड़ोसी के हक़ का भी लाज़िमन ज़िक्र हुआ है। हदीस में भी पड़ोसी के साथ अच्छे सुलूक पर ज़ोर दिया गया है और यहाँ तक ज़ोर दिया गया है कि जो पड़ोसी को सताएगा वह ईमान से ख़ाली माना जाएगा। एक दूसरी हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जिबरील (अलैहि॰) मुझे पड़ोसी के बारे में बराबर (अच्छे सुलूक की) ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि मुझे ख़याल हुआ कि वे उसे वारिस बनाकर छोड़ेंगे।" (हदीस : बुख़ारी-6015, मुस्लिम-2625)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जो आदमी अल्लाह और आख़िरत पर यक़ीन रखता हो उसे चाहिए कि पड़ोसी से अच्छा सुलूक करे।"

(हदीस : बुख़ारी-6019, मुस्लिम-48)

(19)

बेवा (विधवा) और ग़रीब की ख़िदमत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"बेवा और ग़रीब के लिए दौड़-धूप करनेवाला ऐसा ही है जैसे अल्लाह की राह में (अल्लाह के दीन को फैलाने और क़ायम करने के लिए) जिद्दो-जुहद करनेवाला" (रावी ने कहा कि मेरा ख़याल है कि आप सल्ल॰ ने फ़रमाया), "उसका दरजा ऐसा है जैसा कि उस आदमी का जो (लगातार) ख़ुदा की याद में जागता हो और ज़रा भी सुस्ती न करता हो और (लगातार) रोज़े रखता हो और कभी रोज़ा न छोड़ता हो।"

(हदीस : बुख़ारी-6007, मुस्लिम-2982)

जैसा कि इससे पहले गुज़र चुका है कि क़ुरआन में जहाँ-जहाँ अल्लाह के हक़ को अदा करने पर ज़ोर दिया है, वहीं लाज़िमी तौर से ग़रीबों और यतीमों और उनके साथ अच्छे सुलूक की ताकीद की है। एक जगह पर तो ख़ासतौर से उन्हीं के बारे में फ़रमाया –

"और इन (ईमानवालों) के माल में हक़ है माँगनेवाले (ग़रीब) का और (न माँगनेवाले) ख़ाली हाथवाले का।"

(क़ुरआन, सूरा-51 ज़ारियात, आयत-19)

हदीस से मालूम होता है कि बेवाओं और बेसहारा, ग़रीब और दीन-दुखियारियों का भला चाहनेवाला, उनकी परेशानियों का हल करने वाला, उनकी देखभाल करनेवाला, हाथ, पैर और माल से उनकी मदद करनेवाला, मर्तबे के ऐतिबार से ख़ुदा के रास्ते में जान-तोड़ कोशिश करनेवाले आदमी के बराबर है और उसका सवाब ऐसा है जैसे कोई दिन-रात इबादत में लगा हो और बराबर रोज़े रख रहा हो। काश, हम यह सवाब पा सकते!

(20)

रह्म (दया)

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"अल्लाह उस आदमी पर रह्म (दया) नहीं करता, जो इनसानों पर रह्म नहीं करता।" (हदीस : बुख़ारी-7376, मुस्लिम-2319)

हदीस से मालूम हुआ कि इनसानों पर रह्म न करनेवाला आदमी दुनिया और आख़िरत दोनों ही में अल्लाह की रहमत और उसकी मेहरबानी से महरूम है, और जो अल्लाह की रहमत से महरूम हो उसका कहाँ ठिकाना! उसकी दुनिया भी नाकाम और आख़िरत भी तबाह!

इसके बरख़िलाफ़ अगर कोई आदमी इनसानों पर रह्म करता है, उनके काम आता है और उनकी ग़लतियों को माफ़ करता है तो अल्लाह उस आदमी पर रह्म करेगा, उसके काम आएगा और उसकी ग़लतियों को माफ़ करेगा और उसे अपनी रहमतों से नवाज़ेगा।

एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"रह्म करनेवालों पर रहमान रह्म करेगा। तुम ज़मीनवालों पर रह्म करो, आसमानवाला तुमपर रह्म करेगा।"

(हदीस : तिरमिज़ी-1924)

ऊपर बयान की गई पहली हदीस में जिस रह्म का ज़िक्र है, उसका ताल्लुक़ सिर्फ़ मुसलमानों ही से नहीं है, बल्कि सारे इनसानों से है। सारे ही लोग इसका हक़ रखते हैं कि मुसलमान उनपर रह्म करे, उनकी ज़रूरत पूरी करे और उनके काम आए।

दूसरी हदीस में रह्म के दायरे को और फैला दिया गया है, और ज़मीन के सारे जानदारों को इसमें शामिल कर दिया गया है। हक़ीक़त में सारे ही जानदार हमारे रह्म के हक़दार हैं।

अल्लाह की राह में ख़र्च करना

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"ऐ आदम के बेटे! बेशक (ज़रूरत से) ज़्यादा माल को ख़र्च कर देना ही तेरे लिए बेहतर है। और उसे अपने पास रोके रखना, यह तेरे लिए बुरा है। ज़रूरत-भर रखना बुरा नहीं, और ख़र्च करो तो शुरू उन लोगों से करो जिनके ख़र्च के तुम ज़िम्मेदार हो।" (हदीस : मुस्लिम-1036)

इस हदीस से मालूम हुआ कि ज़रूरत से ज़्यादा माल जमा करके रखना बुरा है। उसको अल्लाह के बन्दों पर और दीनी ज़रूरतों में ख़र्च कर देना ज़्यादा अच्छा है, और इनसान के माल के, उसकी ज़ात के बाद सबसे ज़्यादा हक़दार उसके वे क़रीबी नातेदार हैं जिनके ख़र्चे का वह ज़िम्मेदार है, इसके बाद दूसरे लोग।

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"अल्लाह फ़रमाता है, आदम के बेटे! ख़र्च कर मैं तुझपर ख़र्च करूँगा।" (हदीस : बुख़ारी-5352, मुस्लिम-993)

एक हदीस हज़रत अबू-ज़र (रज़ि०) ने रिवायत की है कि –

मैं नबी (सल्ल०) के पास पहुँचा। उस वक़्त आप (सल्ल०) काबा के साए में बैठे थे। आप (सल्ल०) ने मुझे देखकर फ़रमाया, "काबा के रब की क़सम! ये लोग बड़े ही घाटे में हैं।" मैं जाकर बैठ गया पर मुझे क़रार नहीं आया तो मैंने खड़े होकर कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे माँ-बाप आपपर क़ुरबान हों! वे कौन लोग हैं?" फ़रमाया, "ज़्यादा मालवाले। सिवाय उनके जो ऐसे, ऐसे और ऐसे हों (आगे-पीछे दाएँ-बाएँ माल ख़र्च करें) और ऐसे लोग बहुत कम हैं।" (हदीस : मुस्लिम-990)

ज़ुल्म और लालच

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"ज़ुल्म से बचो, क्योंकि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरे की शक्ल में ज़ाहिर होगा और लालच से भी बचो, क्योंकि लालच ने तुम से पहले के लोगों को बरबाद कर दिया। लालच ने उन्हें इस बात पर राज़ी किया कि उन्होंने इनसानों का ख़ून बहाया और उनकी जिन चीज़ों को अल्लाह ने हराम किया था, उन्हें हलाल कर लिया।" (हदीस : मुस्लिम-2578)

इस हदीस में पहले ज़ुल्म से बचने को कहा गया है और बताया गया है कि ज़ुल्म आख़िरत में बहुत-से अंधेरे (तारीकियों) की शक्ल इख़्तियार करेगा और ज़ालिम इनसान अंधेरे में भटकता हुआ जहन्नम में जा गिरेगा। उसके बाद लालच से बचने की ताकीद की गई है। क्योंकि दुनिया की चाहत और माल-जायदाद का लालच ही बेशुमार गुनाहों की जड़ है। यही वह चीज़ है जिससे इनसान आख़िरत को भूल जाता है और दीन के रास्ते में क़ुरबानी देने से कतराता है। लोगों के हक़ मारता है और इनसानों पर ज़ुल्म करता है। इतना ही नहीं, वह उनके माल और इज़्ज़त पर भी हाथ डालता है और वह ख़ून-ख़राबा भी करने लगता है। एक दूसरी हदीस में है–

"जिस किसी ने अपने भाई पर कोई ज़ुल्म किया हो, उसे चाहिए कि आज ही अपना मामला उससे साफ़ कर ले (यानी हक़ अदा कर दे या माफ़ करा ले) इससे पहले कि वह दिन आए जबकि न दीनार होगा और न दिरहम। अगर नेकियाँ होंगी तो उसके किए हुए ज़ुल्मों के मुताबिक़ उससे ले ली जाएँगी और नेकियाँ न होंगी तो जिनपर ज़ुल्म हुआ है उनके गुनाह उसपर डाल दिए जाएँगे (और फिर उसे जहन्नम में डाल दिया जाएगा)।

(हदीस : बुख़ारी-2449)

(23)

घमंड

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जिस आदमी के दिल में ज़रा भी घमंड होगा, वह जन्नत में दाख़िल न होगा।" एक आदमी ने कहा, "आदमी चाहता है कि उसके कपड़े अच्छे हों और जूते अच्छे हों।" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अल्लाह ख़ुद जमील (मनोरम) है, और वह जमाल (मनोरमता) को पसन्द करता है। तकब्बुर (घमंड) नाम है हक़ के मुक़ाबले में सरकशी और लोगों को नीचा समझने का।"

(हदीस : मुस्लिम-91)

जन्नत इस बात का फल है कि इनसान अल्लाह को मालिक, हाकिम और माबूद समझकर और ख़ुद को बिलकुल मुहताज और बेसहारा समझते हुए उसके आगे झुक जाए और अल्लाह को सच्चा दाता मानकर उसकी नेमतों का शुक्र अदा करने में लग जाए। ऐसा आदमी घमंडी और सरकश नहीं हो सकता। जो हक़ के मुक़ाबले में सरकशी अपनाए, उसके यहाँ बन्दगी और इबादत की कोई रूह नहीं पाई जाती और जन्नत में ऐसा आदमी दाख़िल न हो पाएगा। इस तरह जो आदमी अपनी ताक़त, अपनी ख़ूबसूरती, अपने माल, अपने इल्म और अपनी हुकूमत की वजह से घमंडी बन जाता है और दूसरे लोगों को नीचा समझता है तो इसका मतलब यह हुआ कि उसने समझ रखा है कि ये चीज़ें उसकी ज़ाती (निजी) हैं। अगर वह यह समझता कि ये चीज़ें ख़ुदा की दी हुई हैं और वह किसी वक़्त भी इन्हें छीन सकता है तो वह घमंड करने के बजाय शुक्र के साथ अल्लाह के आगे झुक जाता और अपने बुरे अंजाम से डरता रहता।

(24)

ऊँच-नीच

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"तुममें जो लोग जाहिलियत में अच्छे थे, वे इस्लाम में भी अच्छे हैं, जबकि वे (दीनी) इल्म और सूझ-बूझ हासिल कर लें।"

(हदीस : बुख़ारी-4689, मुस्लिम-2378)

यह एक लम्बी हदीस का टुकड़ा है। पूरी हदीस इस तरह है–

हज़रत अबू-हुरैरा (रज़ि॰) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से पूछा गया कि सबसे ज़्यादा शरीफ़ कौन है? आप (सल्ल॰) ने कहा, "अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा शरीफ़ (बुज़ुर्ग) वह है जो ज़्यादा अल्लाह से डरता है।" लोगों ने कहा, "हम आपसे यह नहीं पूछते।" फ़रमाया, "तो सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग अल्लाह के नबी यूसुफ़ हैं, जो अल्लाह के नबी (याक़ूब) के बेटे हैं, जो अल्लाह के नबी (इसहाक़) के बेटे हैं, जो अल्लाह के दोस्त (इबराहीम) के बेटे हैं।" इसपर लोगों ने कहा, "आपसे हम यह भी नहीं पूछते।" फ़रमाया, "तो अरब की खानों (क़बीलों) के बारे में मुझसे पूछते हो?" कहा, "हाँ।" फ़रमाया, "तुममें जो लोग जाहिलियत के ज़माने में अच्छे थे, वह इस्लाम में भी अच्छे हैं, जबकि वे (दीनी) इल्म और समझ-भूझ हासिल कर लें।" (हदीस : बुख़ारी-4689, मुस्लिम-2378)

मालूम हुआ कि इस्लाम में जाति, रंग और माल-दौलत की बुनियाद पर कोई ऊँच-नीच नहीं। सब आदम और हव्वा की औलाद और एक ही अल्लाह के बन्दे हैं, इसलिए सब बराबर हैं। हाँ, जो जितना ज़्यादा ख़ुदा को पहचाननेवाला और जितना ज़्यादा ख़ुदा से डरनेवाला है वह उतना ही

ज़्यादा ऊँचे मर्तबेवाला है। क़ुरआन मजीद में है—

"ऐ इनसानो! हमने तो सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हें ख़ानदानों और क़बीलों की शक्ल दे दी, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। तुममें ज़्यादा बुज़ुर्ग वह है जो ज़्यादा ख़ुदा से डरता हो।" (क़ुरआन, सूरा-49 हुजुरात, आयत-13)

एक दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"लोग अपने मरे हुए बाप-दादा पर फ़ख़्र करना छोड़ दें, वे तो जहन्नम का कोयला हैं, नहीं तो वे अल्लाह की निगाह में उस कीड़े से भी ज़्यादा ज़लील ठहरेंगे जो पाख़ाने (मल) को अपनी नाक से ढकेलता है। अल्लाह ने तुम्हारे अन्दर से जाहिलियत का घमंड और बाप-दादा पर नाज़ (गर्व) करने के ऐब को दूर कर दिया है। अब एक आदमी या तो ख़ुदा से डरनेवाला मोमिन है या बदक़िस्मत नाफ़रमान। सब इनसान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बने थे।" (हदीस : तिरमिज़ी-3955)

हज़रत यूसुफ़ (अलैहि॰) को प्यारे नबी (सल्ल॰) ने सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग इसलिए बताया कि वे ख़ुद भी नबी थे और उनके बाप-दादा, परदादा सब अल्लाह के नबी और उसके दीन की पैरवी करनेवाले और दावत देनेवाले थे। जब प्यारे नबी (सल्ल॰) से अरब क़बीलों के बारे में मालूम किया गया तो आप (सल्ल॰) ने किसी एक क़बीले को ज़्यादा बुज़ुर्ग और शरीफ़ बताने के बजाय यह फ़रमाया कि जो लोग जाहिलियत के दौर में बुलन्द इनसानी और अख़लाक़ी ख़ूबियोंवाले थे (चाहे उनका ताल्लुक़ किसी भी क़बीले से हो) इस्लाम को क़बूल करने के बाद वही सबसे अच्छे होंगे, शर्त यह है कि पिछली ख़ूबियों के साथ दीनी इल्म और समझ-बूझ से भी ख़ुद को सँवार लें, क्योंकि यही तक़वा (धर्मपरायण्ता) की बुनियाद है।

(25)

ग़ुस्सा

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"दूसरों को पछाड़नेवाला ताक़तवर नहीं है। ताक़तवर वह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने-आपपर क़ाबू रखे।"

(हदीस : बुख़ारी-6114, मुस्लिम-2609)

ग़ुस्सा कई बुराइयों की जड़ है। ग़ुस्से की हालत में इनसान अपने होश और हवास खो बैठता है। उसे यह महसूस नहीं होता कि उसके मुँह से क्या निकल रहा है और जो कुछ वह कर रहा है उसका नतीजा क्या होगा। तलाक़, क़त्ल, ख़ुदकुशी और ख़ानदानों और बस्तियों की बरबादी आमतौर से ग़ुस्से ही का नतीजा होती है। कभी-कभी ग़ुस्से में इनसान अपनी दुनिया और आख़िरत दोनों तबाह कर लेता है।

एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि मुझे नसीहत कीजिए। तो आप (सल्ल०) ने कहा, "ग़ुस्सा न करो।" उस आदमी ने कई बार नसीहत के लिए कहा और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हर बार जवाब में यही कहा, "ग़ुस्सा न करो।" (हदीस : बुख़ारी-6116)

हदीसों में ग़ुस्सा दूर करने के बहुत-से तरीक़े बताए गए हैं। जैसे–

"ग़ुस्सा शैतान की वजह से आता है। शैतान आग से पैदा हुआ है और आग पानी से बुझाई जाती है। तो जब किसी को ग़ुस्सा आए तो वह वुज़ू कर ले (मुँह-हाथ धो ले)।"

(हदीस : अबू-दाऊद-4784)

एक और हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"जब तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए और वह खड़ा हो तो बैठ

जाएं, अगर ग़ुस्सा चला जाए तो ठीक है, वरना लेट जाए।"

(हदीस : अबू-दाऊद-4782, अहमद-21348)

एक और हदीस में ग़ुस्सा पीने की तारीफ़ इन लफ़्ज़ों में की गई है–

"अल्लाह के नज़दीक सबसे अच्छा घूँट वह ग़ुस्सा है, जिसे कोई बन्दा अल्लाह की ख़ुशी के लिए पी जाए।"

(हदीस : अहमद-6114)

(26)

शर्म और हया

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"हया (शर्म) सिर से पैर तक भलाई है।" (हदीस : मुस्लिम-37)

हया इस बात का नाम है कि इनसान को बेशर्मी और बुराइयों से घिन आए। ऐसी चीज़ के सरासर भलाई होने में कौन शक कर सकता है! जो आदमी जितना ज़्यादा शर्म और हयावाला होगा उतना ही बुराइयों से दूर रहेगा और जो जितना बेशर्म और बेहया होगा उतना ही बुराइयाँ करने में हिम्मत दिखाएगा। आज की बुनियादी ख़राबी बढ़ती हुई आम बेशर्मी और बेहयाई है। एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"लोगों तक अगले नबियों की जो तालीम (शिक्षा) पहुँची है, उसमें से एक यह है कि जब तुम बेशर्म हो गए तो जो चाहे करो।" (हदीस : बुख़ारी-6120)

(27)

नर्मी

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"जो नर्मी से महरूम हो गया, वह भलाई से महरूम हो गया।"

(हदीस : मुस्लिम-2592)

एक दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"अल्लाह नर्म आदत का है, नर्मी को पसन्द करता है और नर्मी पर वह कुछ देता है जो सख़्ती और किसी और चीज़ पर नहीं देता।" (हदीस : मुस्लिम-2593)

मालूम हुआ कि जहाँ तक हो सके नर्मी ही बरतना चाहिए। यह और बात है कि कभी सख़्ती करना ही बहुत ज़रूरी हो जाए।

(28)

ज़बान और शर्मगाह की हिफ़ाज़त

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"जो आदमी दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (यानी ज़बान की हिफ़ाज़त) और दोनों पैरों के बीच की चीज़ (यानी शर्मगाह की हिफ़ाज़त) के सिलसिले में मुझे ज़मानत दे, मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।" (हदीस : बुख़ारी-6474)

यानी जो आदमी अल्लाह को ख़ुश करने के लिए ज़बान और शर्मगाह को क़ाबू में रखे और उनसे कोई ग़लत काम न होने दे, वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। ज़बान के बारे में प्यारे नबी (सल्ल०) ने

फ़रमाया—

"बन्दा कभी-कभी अल्लाह की ख़ुशी की कोई बात करता है, जिसे वह कोई अहमियत भी नहीं देता, मगर अल्लाह उसकी वजह से उसका दरजा बढ़ा देता है और कभी ऐसा होता है कि बन्दा अल्लाह की नाख़ुशी की कोई बात करता है और उसे कोई अहमियत नहीं देता, हालाँकि वह उसकी वजह से जहन्नम के बहुत गहरे गढ़े में जा गिरता है।" (हदीस : बुख़ारी-6478)

ज़िना और बदकारी की तफ़सील बताते हुए प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"आँखों का ज़िना (नामहरम/पराई औरत को बुरी नज़र से) देखना है। कानों का ज़िना (ज़िना की बातें) सुनना है। ज़बान का ज़िना (ज़िना की) बात करना है। हाथ का ज़िना (शर्मगाह से) छेड़छाड़ करना है, पैर का ज़िना (ज़िना की तरफ़) क़दम बढ़ाना है। और दिल में (ज़िना के सिलसिले में) शहवानी (वासना का) ख़याल और बुरी तमन्नाएँ करना है और शर्मगाह उस (के ज़िना) की तसदीक़ (पुष्टि) या तकज़ीब (खण्डन) करती है।" (हदीस : मुस्लिम-2657)

अगर ज़िना और दूसरे अश्लील कामों से बचना चाहते हो तो फिर इन सारी बातों से बचना ज़रूरी है।

गाली देना

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"मुसलमान को गाली देना अल्लाह की नाफ़रमानी है और उससे लड़ना बेदीनी है।" (हदीस : बुख़ारी-48, मुस्लिम-64)

मुसलमान से लड़ना तो किसी बेदीन का ही काम है, दीनदार का नहीं। लड़ाई तो बड़ी चीज़ है उसके साथ बदज़ुबानी भी गुनाह है। दुख की बात है कि मुसलमान को गाली देना और उससे लड़ना इस वक़्त की आम बात है और इसे कोई बुराई नहीं समझता। एक और हदीस में है–

"शर्म करना और चुप रहना ईमान के हिस्से हैं और बेहूदा बातें करना और ज़्यादा बोलना (बकवास करना) निफ़ाक़ के हिस्से हैं।" (हदीस : तिरमिज़ी-2027, अहमद-22312)

इस हदीस में यह नहीं है कि सिर्फ़ मुसलमानों को ही गाली देना बुरा है। गाली देना और बेहूदा बातें करना हर हाल में बुरी चीज़ हैं चाहे किसी से भी की जाए। एक दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"बहुत बड़े गुनाह की है यह बात कि आदमी अपने माँ-बाप को गाली दे।" सहाबा (रज़ि॰) ने अर्ज़ किया, "क्या कोई अपने माँ-बाप को भी गाली दे सकता है?" कहा, "हाँ! वह दूसरे आदमी के बाप को गाली देता है तो वह उसके बाप को गाली देता है और वह किसी की माँ को गाली देता है तो (जवाब में) वह आदमी उसकी माँ को गाली देता है।" (हदीस : मुस्लिम-90)

अफ़सोस कि अब इनसान अपने माँ-बाप को गाली दिलवाता ही नहीं भी देता है! एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल

(सल्ल॰) ने फ़रमाया—

"मुर्दों को बुरा-भला न कहो, क्योंकि वे अपने किए को पहुँच चुके हैं।" (हदीस : बुख़ारी-1393)

(30)

ग़ीबत, तुहमत, चुग़ली

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"जानते हो ग़ीबत (पीठ-पीछे किसी की बुराई करना) क्या है?" सहाबा (रज़ि॰) ने कहा, "अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं।" नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "तुम अपने भाई का ज़िक्र इस ढंग से करो जो उसे नापसन्द हो।" आप (सल्ल॰) से पूछा गया, "आपका क्या ख़याल है अगर मेरे भाई में वह बात मौजूद हो जो मैं कहूँ?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "तुम जो बात कह रहे हो अगर उसमें है तो तुमने ग़ीबत की और नहीं है तो तुमने तुहमत लगाई।" (हदीस : मुस्लिम-2589)

क़ुरआन में है —

"और तुममें से कोई किसी की ग़ीबत न करे। क्या तुममें से कोई पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, तुम्हें तो इस बात से (बहुत) घिन आएगी।"

(क़ुरआन, सूरा-49 हुजुरात, आयत-12)

हदीस में इसी नापसन्दीदा काम की तफ़सील है।

अगर किसी की ग़ैर-हाज़िरी में उसकी बुराई की गई जो हक़ीक़त में उसमें पाई जाती है तो यह ग़ीबत या निन्दा है और अगर वह बुराई उसमें नहीं है तो यह तुहमत या मिथ्यारोपण है जो ग़ीबत से भी बड़ा पाप है। कई बार ऐसा होता है कि ग़ीबत (पीठ-पीछे किसी की बुराई करना) चुग़ली बन जाती है और ये तीनों चीज़ें ग़ीबत, तुहमत और चुग़ली

इनसान को बरबाद कर देनेवाली और समाज को टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाली हैं। इसी लिए नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया है—

"चुग़ली करनेवाला जन्नत में न जाएगा।"

(हदीस : बुख़ारी-6056, मुस्लिम-105)

(31)

सब्र और शुक्र

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया —

"मोमिन का मामला बड़ा अजीब है। उसके सारे मामले (उसके लिए) भलाई हैं — और मोमिन के सिवा यह बात किसी को हासिल नहीं — उसे कोई नेमत मिलती है तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करता है और यह बात उसके लिए भलाई का ज़रिआ होती है और जब उसे कोई तकलीफ़ की बात पेश आती है तो सब्र करता है और यह उसके लिए भलाई का सबब होता है।"

(हदीस : मुस्लिम-2999)

शुक्र की हक़ीक़त यह है कि इनसान अपने सच्चे दाता — अल्लाह — को पहचाने, हर मेहरबानी पर दिल से उसका शुक्रगुज़ार हो, ज़बान से भी उसका शुक्र अदा करे और उसकी दी हुई चीज़ों को काम में लाते हुए उसकी ख़ुशी का ध्यान रखे और इस बात को भूल न जाए कि सब कुछ उसी का दिया हुआ है और उसने तुम्हें बेहिसाब दे रखा है और उसके दीन का, जो उसकी सबसे बड़ी नेमत है, हक़ अदा करे, यह शुक्र है। इसमें कोई शक नहीं कि शुक्र सरासर भलाई, अल्लाह की रज़ा और आख़िरत की कामयाबी का ज़रिआ है।

सब्र यह है कि अपनी कोई भी चीज़, चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों

न हो, छिन जाने पर ख़ासकर जबकि वह अल्लाह की राह में जाए, हाय-तौबा न करे, बददिल और नाख़ुश न हो, अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहे और इस यक़ीन को बनाए रखे कि नेमत अल्लाह की थी, उसने ले ली। इससे अच्छा इस्तेमाल हो भी क्या सकता है! यह भी यक़ीन रखे कि अल्लाह का कोई काम बे-मक़सद नहीं होता, अगर हमने सब्र किया तो वह हमसे राज़ी होगा और आख़िरत में अच्छे-से-अच्छा बदला भी देगा और हर हाल में अल्लाह और उसके दीन से जुड़ा रहे। क़ुरआन में है कि सब्र से दुनिया में अल्लाह की मदद हासिल होती है और आख़िरत में इससे अल्लाह की ख़ुशी हासिल होगी।

(32)

हक़ पर जमे रहना

सुफ़ियान-बिन-अब्दुल्लाह सक़फ़ी ने कहा कि मैंने पूछा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इस्लाम के बारे में कोई ऐसी बात बता दीजिए कि आपके बाद फिर मुझे किसी से इस्लाम के बारे में पूछना न पड़े।" प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "कहो, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर उसपर जम जाओ।"

(हदीस : मुस्लिम-38)

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से सुफ़ियान (रज़ि॰) का सवाल इस्लाम की रूह के बारे में था, जिसके जान लेने के बाद फिर उन्हें इस्लाम की हक़ीक़त के बारे में किसी और से पूछने की ज़रूरत न पड़े। रसूल (सल्ल॰) ने उनके जवाब में फ़रमाया कि अल्लाह पर ईमान लाओ और फिर उसपर जम जाओ। यानी अल्लाह की बन्दगी और ग़ुलामी की राह अपनाकर ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक उसके तक़ाज़ों को पूरा करने में लगे रहो।

हक़ीक़त में सही रास्ता एक ही है और वह यह कि इनसान हक़ को अपनाकर सारी परेशानियों और आज़माइशों के बावजूद ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक उसपर जमा रहे। अगर उसे सच्चा रास्ता न मिला तो वह नाकाम ही रहा और अगर राह पाकर उसपर न चला या चलकर छोड़ दिया तब भी उसे नाकाम ही कहा जाएगा। क़ुरआन और हदीस में बताया गया है कि दुनिया और आख़िरत की सारी कामयाबियों की बुनियाद सब्र और हक़ पर जमे रहना है। सब्र के मानी यह हैं कि मोमिन मुसीबतों और परेशानियों का बहादुरी के साथ मुक़ाबला करे और किसी हाल में सच्चे रास्ते से हटने का नाम न ले, चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए या उसकी औलाद और ख़ानदान के लोग तबाह ही क्यों न हो जाएँ। सच पर जमना उसे कहते हैं कि आदमी सच्चाई को अपना लेने के बाद ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक मज़बूती के साथ उससे चिमटा रहे और हक़ के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए अपनी सारी क़ाबिलियतों और ताक़तों के साथ अपने-आपको झोंक दे। हक़ीक़त में मज़बूती और जमाव के बिना न दुनिया में कोई कामयाबी है और न आख़िरत में।

हलाल, हराम और जिसमें शक हो

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"लोग एक ऐसा ज़माना देखेंगे जब आदमी इस बात की परवाह न करेगा कि उसने जो चीज़ ली, कहाँ से ली, हलाल तरीक़े से ली या हराम तरीक़े से।" (हदीस : बुख़ारी-2059)

यानी लोगों की निगाह में हलाल और हराम में कोई फ़र्क़ न रह जाएगा। एक दूसरी हदीस में है—

"बेशक हलाल और हराम वाज़ेह हैं और इन दोनों के बीच कुछ शकवाली चीज़ें हैं, जिन्हें बहुत-से लोग नहीं जानते (कि वे हलाल हैं या हराम), तो जो आदमी ऐसी शकवाली चीज़ों से बचा रहा, उसने अपने दीन, अपनी इज़्ज़तो-आबरू को बचा लिया और जो शकवाली चीज़ों में पड़ा वह हराम में पड़ गया, जैसे, चरवाहा जो ममनूअ (वर्जित) चरागाह के आसपास चराता हो, उसके जानवर ममनूअ चरागाह में चरने लगेंगे। सुनो! हर बादशाह की एक ख़ास और ममनूअ चरागाह होती है। सुनो! अल्लाह की ममनूअ चरागाह उसकी हराम की हुई बातें हैं। सुनो! जिस्म में एक लोथड़ा है जब वह ठीक रहता है तो सारा जिस्म ठीक रहता है और जब वह ख़राब हो जाता है तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है। सुनो! वह लोथड़ा दिल है।"

(हदीस : मुस्लिम -1599)

यह एक बहुत ही अहम हदीस है। इससे एक बात यह मालूम होती है कि मोमिन के लिए ज़रूरी है— अगर उसे अपना दीन प्रिय है – कि वह न सिर्फ़ हराम, बल्कि शक-शुब्हेवाली चीज़ों से भी बचे। दूसरी बात यह कि दीनदारी का दारोमदार पूरे तौर से दिल के सुधार पर है। दिल में अल्लाह का डर, उसकी मुहब्बत और अच्छे जज़बात हों तभी इनसान नेक होगा वरना नहीं।

दीन की तरफ़ बुलाना

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जो आदमी किसी नेक राह की तरफ़ बुलाएगा उसे उन सारे लोगों के बराबर नेकी का बदला मिलेगा जो उसपर चलेंगे और इससे उन लोगों के बदले में कोई कमी नहीं होगी और जो आदमी गुमराही की तरफ़ बुलाएगा उसके हिस्से में उन सारे लोगों के गुनाहों के बराबर गुनाह आएगा, जो उसकी बात मानेंगे और इससे उनके अपने गुनाहों में भी कोई कमी नहीं होगी।" (हदीस : मुस्लिम-2674)

दुनिया में आदमी या तो गुमराही की तरफ़ बुलाता है या उसका बुलावा सीधे रास्ते और अल्लाह के दीन की तरफ़ होता है। जो आदमी इनसानों के ख़ुद बनाए हुए निज़ामों, क़ानूनों, बाप-दादाओं के रस्म-रिवाजों, बुराइयों और बदकारियों, नफ़्स की ख़ाहिशों और दुनिया-परस्ती की तरफ़ बुलाता है वह उन सारे लोगों के गुनाहों का हिस्सेदार होता है, जो उसकी बात मानकर ग़लत रास्ते पर चल पड़ें और उसे उन सभी लोगों के बराबर सज़ा मिलेगी।

इसके बरख़िलाफ़ जो आदमी अल्लाह की बन्दगी, रसूल (सल्ल॰) की पैरवी, सच्चे दीन की पैरवी, दीन की किसी बात या नेकी की तरफ़ लोगों को बुलाता है, उसे उन सारे लोगों के बराबर बदला मिलेगा जो उसकी बात पर अमल करेंगे। अगर किसी आदमी की कोशिशों की वजह से कुछ लोग ईमान ले आते हैं या कुछ ग़ाफ़िल मुसलमान अल्लाह की तरफ़ पलट आते हैं और नेक बन जाते हैं तो दावत देनेवाले के हिस्से में अपनी नेकियों के बदले के साथ उन लोगों के ईमान और नेकियों का बदला भी आएगा। कितना मुबारक और शानदार है यह अंजाम और कितना भयानक और बुरा है वह अंजाम!

भलाई पर उभारना और बुराई से रोकना

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"तुममें से जो आदमी किसी बुराई को देखे, उसे अपने हाथ (ताक़त) से बदल दे, अगर यह न हो सके तो ज़ुबान से उसे बदलने की कोशिश करे, और जिससे यह भी मुमकिन न हो तो उसे बदलने के लिए तड़पे और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दरजा है।" (हदीस : मुस्लिम-49)

एक और हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"मुझसे पहले जिस नबी को भी अल्लाह ने किसी उम्मत में भेजा, उसकी उम्मत में उसके जाँनिसार और सच्चे साथी हुए जो उसके तरीक़े को मज़बूती से पकड़ते और उसके हुक्मों पर चलते थे। फिर उनके बाद ऐसे नालायक़ पैदा हो जाते हैं जो दावे करते हैं, मगर अमल नहीं करते और ऐसे काम करते हैं जिन्हें करने का उन्हें हुक्म नहीं दिया गया, तो जो आदमी ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ अपने हाथ से जिद्दो-जुहद करे वह मोमिन है, जो आदमी ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ अपनी ज़ुबान से जिद्दो-जुहद करे वह मोमिन है और जो आदमी ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ अपने दिल (के जज़बात) से जिद्दो-जुहद करे वह मोमिन है। अगर यह भी न हो तो राई के दाने के बराबर उसमें ईमान नहीं।"

(हदीस : मुस्लिम-50)

मालूम हुआ कि नेकी को फैलाना और बुराइयों से रोकना ईमान के ज़रूरी तक़ाज़े हैं।

(36)

अनुशासन और इताअत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"मुसलमान के लिए लाज़िमी है कि वह (अमीर का हुक्म) सुने और उसकी फ़रमाँबरदारी करे, चाहे उसे पसन्द हो या नापसन्द, जब तक कि उसे (अल्लाह की) नाफ़रमानी का हुक्म न दिया जाए, तो जब नाफ़रमानी का हुक्म दिया जाए तो न सुनना है और न बात मानना है।"(हदीस : बुखारी-7144, मुस्लिम-1839)

मालूम हुआ कि मुसलमानों को मुनज़्ज़म (संगठित) और इजतिमाई ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए। उनका एक अमीर (सरदार) होना चाहिए जिस की सरदारी में बहुत-से अमीर और हाकिम हों। मुसलमानों को अपने इन सब अमीरों और हाकिमों की फ़रमाँबरदारी करनी है, चाहे उनके हुक्म पसन्द आएँ या नापसन्द, लेकिन यह इताअत दीनी हदों के अन्दर होगी। अगर अमीर और हाकिम अल्लाह की नाफ़रमानी और सरकशी का हुक्म दें तो कभी भी बात न मानी जाएगी। एक दूसरी हदीस में है–

"नाफ़रमानी में किसी की बात नहीं मानी जाएगी, इताअत सिर्फ़ भलाई ही में है।" (हदीस : बुख़ारी-7257, मुस्लिम-1840)

एक और हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"जिसने मेरी बात मानी उसने अल्लाह की फ़रमाँबरदारी की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की, और जिसने अमीर की बात मानी उसने मेरी बात मानी और जिसने अमीर की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की। अमीर ढाल है जिसकी हिफ़ाज़त में जंग की जाती है और (फ़ितनों और हमलों से) बचा जाता है। तो अगर वह इनसाफ़

और ख़ुदातरसी के साथ हुक्म दे तो उसे बदला (सवाब) मिलेगा, वरना उसपर उसके किए का वबाल आएगा।"

(हदीस : बुख़ारी-2957)

इस हदीस से पता चलता है कि इजतिमाई नज़्म की ज़रूरत और अमीर के हुक्म मानने की इस्लाम में कितनी ज़्यादा अहमियत है।

(37)

अल्लाह की याद और दुआ

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"जो आदमी अपने रब को याद करता है और जो याद नहीं करता दोनों की मिसाल ऐसी है जैसे ज़िन्दा और मुर्दा।"

(हदीस : बुख़ारी-6407)

इनसान की दीनी, अख़लाक़ी और रूहानी ज़िन्दगी का दारोमदार अल्लाह की बन्दगी और उसके दीन की सच्ची पैरवी पर है और यह उसी वक़्त मुमकिन है जबकि इनसान का ताल्लुक़ अल्लाह से ज़िन्दा और मज़बूत हो। अल्लाह का ज़िक्र चाहे नमाज़ की शक्ल में हो या क़ुरआन पढ़ने की शक्ल में, दुआओं की शक्ल में हो या अल्लाह की याद के वे बोल हों जो नबी (सल्ल॰) के मुँह से निकले हों, इसी मक़सद के लिए है।

एक और हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"अल्लाह फ़रमाता है, मैं अपने बन्दे के यक़ीन के मुताबिक़ हूँ जो वह मेरे साथ रखता है। मैं उसके साथ होता हूँ जब वह मुझे याद करता है। जब वह मुझे अपने जी में याद करता है तो मैं भी उसे अपने जी में याद करता हूँ और जब वह मुझे किसी मजमे में याद करता है तो मैं उससे बेहतर मजमे में उसे याद करता हूँ।"

(हदीस : बुख़ारी-7405)

एक और हदीस में है कि प्यारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"दुआ इबादत है।"

फिर नबी (सल्ल०) ने क़ुरआन, सूरा-40 मोमिन, आयत-60 पढ़ी–

"और तुम्हारे रब ने कहा, मुझसे दुआ माँगो, मैं क़बूल करूँगा। जो मेरी इबादत के मुक़ाबले में सरकशी करते हैं वे ज़लील और रुसवा होकर जहन्नम में जाएँगे।"

(हदीस : तिरमिज़ी-2969 अबू-दाऊद-1479, इब्ने-माजा-3828)

(38)

तौबा और अल्लाह से माफ़ी माँगना

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया –

"ऐ इनसानो! अल्लाह से तौबा करो कि मैं दिन में सौ-सौ बार अल्लाह से तौबा करता हूँ।" (हदीस : मुस्लिम-2702/42)

प्यारे नबी (सल्ल०) मासूम (बेगुनाह) और बेहतरीन किरदार के मालिक थे, तब भी वे दिन में सौ-सौ बार तौबा करते थे, इसी से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि हम जैसे गुनाहगारों को तौबा की कितनी ज़्यादा ज़रूरत है। हक़ीक़त में इनसान के सुधार और उसकी कामयाबी का दारोमदार इस बात पर है कि वह हमेशा अपनी जाँच करता रहे और फिर जो कमी उसे अपने अन्दर दिखाई दे, उसपर अल्लाह से माफ़ी माँगे और आगे के लिए उससे बचने का पक्का इरादा और कोशिश भी करे, यही सच्ची तौबा है। एक हदीस में है –

"जब मोमिन गुनाह करता है तो उसके दिल में एक काला निशान पैदा हो जाता है। अगर वह तौबा और इस्तिग़फ़ार करता है और (ग़लत काम से) रुक जाता है तो दिल साफ़ हो

जाता है। लेकिन अगर वह और गुनाह करता है तो यह कालिक बढ़ती चली जाती है, यहाँ तक कि पूरे दिल पर छा जाती है (और फिर उसका सुधार नामुमकिन हो जाता है) तो यही है वह ज़ंग जिसका ज़िक्र क़ुरआन में अल्लाह ने किया है उनके दिलों पर उनके करतूत (बुरे काम) ज़ंग बनकर छा गए हैं।"

(हदीस : इब्ने-माजा-4244, अहमद-7952)

एक और हदीस में है कि प्यारे रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"अल्लाह रात में अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का गुनाहगार तौबा कर ले (माफ़ी माँग ले) और दिन में अपना हाथ फैलाता है ताकि रात का गुनाहगार तौबा कर ले। यह उस वक़्त तक है जब तक कि सूरज मग़रिब से न निकल आए (यानी क़ियामत न आ जाए)।" (हदीस : मुस्लिम-2759)

(39)

दुनिया और आख़िरत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"दुनिया में इस तरह रहो जैसे तुम परदेसी हो या राह चलते मुसाफ़िर।" (हदीस : बुख़ारी-6416)

यह दुनिया इनसान का असली वतन नहीं है। यह परदेस है जहाँ उसे थोड़े दिन रहना है। फिर सब कुछ छोड़कर ख़ाली हाथ अपने असली वतन आख़िरत की तरफ़ चले जाना है और फिर वहीं हमेशा के लिए रहना है। वहाँ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उसे वही सामान मिलेगा जो ईमान और

अच्छे कामों की शक्ल में उसने दुनिया में कमाया होगा। अगर उसके पास ईमान और नेक कामों की पूँजी होगी तो उसे आख़िरत की हमेशा रहनेवाली ज़िन्दगी में जन्नत की कभी न ख़त्म होनेवाली, बेपायाँ, हक़ीक़ी और ऐसी नेमतें मिलेंगी जिनके बारे में कभी सोचा भी नहीं जा सकता। ऐसे नेक इनसान को वहाँ अल्लाह की ख़ुशी, उसका क़ुर्ब और उसका दीदार मिलेगा। वरना अल्लाह के ग़ज़ब और जहन्नम के दर्दनाक और भयानक अज़ाब से दोचार होगा। इस बात के मालूम हो जाने के बाद ज़रूरी है कि मोमिन का दिल दुनिया के बजाय आख़िरत की तरफ़ लगा रहे। दुनिया की कामयाबी और नाकामी से कहीं ज़्यादा उसे आख़िरत की कामयाबी की फ़िक्र करनी चाहिए और जहन्नम की सज़ा से बचने के लिए फ़िक्रमन्द होना चाहिए। और उसे जन्नत के रास्ते पर यकसू होकर दौड़ पड़ना चाहिए। और दुनिया के साज़ो-सामान में से उसे उसी क़िस्म का और उतना ही सामान साथ रखना चाहिए जो मंज़िल तक जाने में मददगार हो न कि रुकावट। एक हदीस में है—

> "जन्नत में एक चाबुक के बराबर जगह भी दुनिया और जो कुछ उसमें है उससे कहीं बेहतर है।" (हदीस : बुख़ारी-3250)

इस हदीस का मतलब यह है कि जन्नत की थोड़ी-सी जगह और वहाँ की ज़रा-सी नेमत दुनिया की सारी नेमतों से अच्छी है। इसलिए इनसान को दुनिया की नेमतों के बजाय जन्नत की नेमतों और अल्लाह की ख़ुशी की तमन्ना करनी चाहिए।

(40)

अच्छी नीयत

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"अमल का दारोमदार सरासर नीयत पर है, और आदमी के लिए बस वही है जिसकी उसने नीयत की। तो जिस आदमी की हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ होगी, उसकी हिज़रत अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ होगी और जिसकी हिजरत किसी दुनियावी फ़ायदे या किसी औरत से शादी करने के लिए होगी तो उसकी हिजरत उसी चीज़ के लिए होगी, जिसके लिए उसने हिज़रत की।

(हदीस : बुख़ारी-6689, मुस्लिम-1907)

नेक काम उसी वक़्त अल्लाह के यहाँ क़बूल होंगे जबकि उनके पीछे अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने का जज़बा काम कर रहा हो और वे नेक काम रसूल (सल्ल॰) के बताए हुए तरीक़े पर किए गए हों। अगर कोई नेक काम दुनिया का कोई फ़ायदा या शोहरत, दिखावा और नाम के लिए किया गया हो तो ऐसा काम चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो हरगिज़ क़बूल न होगा, बल्कि उलटा करनेवाले के मुँह पर मार दिया जाएगा। एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया –

"अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैं सारे शरीकों से ज़्यादा शिर्क के काम से बेनियाज़ हूँ। जो आदमी कोई अमल करे और उसमें मेरे साथ किसी और को शरीक कर ले तो मैं उस अमल को करनेवाले के लिए छोड़ देता हूँ और उसे क़बूल नहीं करता।"

(हदीस : मुस्लिम-2985)

यानी जिस नेक काम में मुझे ख़ुश करने के साथ-साथ किसी और की ख़ुशी भी शरीक हो वह नेक अमल मुझे बिलकुल पसन्द नहीं आता और मैं उसे रद्द कर देता हूँ।